मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२४ • अगस्त-२०१७

प.पू. लालजी महाराजश्री का
२० वाँ प्रागट्योत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

1

2

3

(१) प.पू. लालजी महाराजश्री के २० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में केक काटते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर अमदावाद मंदिर के सभा मंडप में सभा को आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में प.पू. लालजी महाराजश्री । (३) बनासकांठा विस्तार में आई हुइ जलप्लावन की आपत्ति में सहायता करने के लिये कालुपुर मंदिर से फूट पेकेट तथा जीवन की आवश्यकतावाली वस्तुओं का वितरण करने के लिये प.पू. महंत स्वामी तथा संतो को मार्गदर्शन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२४

अगस्त-२०१७

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री गणपति देव	०६
०४.	नीलकंठ प्रभु की जय हो	०८
०५.	श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर कल्याणकारी शुभ वचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२२

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

भगवान के भक्त चार प्रकार की मुक्ति की भी इच्छा नहीं रखते । वह चार प्रकार की मुक्ति क्या है ? एक तो भगवान के लोक में रहना, दूसरी भगवान के समीप में रहना, तीसरी भगवान के समान स्वरुप को प्राप्त करना तथा चौथी भगवान के समान ऐश्वर्य प्राप्त करना । इस तरह चार प्रकार की मुक्ति बताई गई है, इन चारो प्रकार की मुक्ति भी भगवान के भक्त नहीं चाहते, मात्र भगवान की सेवा की इच्छा करते हैं ।

जे भगवान नो भक्त थईने एचार प्रकारनी मुक्तीनी इच्छा राखे तो ते सकाम भक्त कहेवाय, अने जे ए चतुर्धा मुक्तिने न इच्छे ने केवल भगवाननी सेवा ने ज इच्छे ते निष्काम भक्त कहेवाय । (ग.प्र.प्र. ४३)

उपरोक्त वचनामृत हम सभी के लिये कहा गया है । इस लिये इसका सदा ध्यान रखकर निष्काम भक्त बनकर श्रीहरि की सेवा करके उन्हें प्रसन्न करना है ।

समग्र गुजरात में बरसात सुखके साथ दु:ख की पीडा भी लाया ।

प्रथम जालावाज - मोरबी के विस्तार में बाढ से सभी त्रसित हुए बाद में बनासकांठा में हृदयद्रावक जैसी स्थिति हो गई थी, सर्वत्र प्राकृतिक जल प्लावन से जितना नुक्शान हुआ उसमें शारीरिक - मानसिक - आर्थिक हानि के साथ पशु प्राणी भी बह गये । इसकी कोई गिन्ती ही नहीं । हजारो परिवार घर से बेघर हो गये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री भी खूब व्यथित हृदय से सभी की आपत्ति दु:ख कम हो इसके लिये भगवान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना किये हैं ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

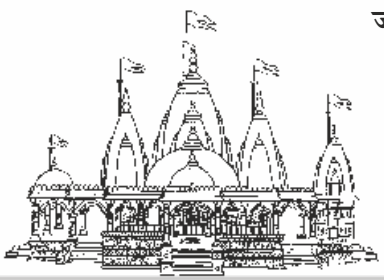

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१७)

६ विदेश से स्वदेश आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में हजारो संत-हरिभक्तों द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में भव्य गुरु पूजन महोत्सव संपन्न।

१८ से ३१ ओस्ट्रेलीया मे सीडनी, पर्थ तथा मेलबोर्न श्री स्वामिनारायण मदिर के कथा पारायण में पदार्पण, वहाँ से लंडन ओल्डता श्री स्वामिनारायण मंदिर का ४० वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१७)

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में हजारो संत-भक्तों द्वारा गुरु पूजन महोत्सव संपन्न।

१९ २० वाँ प्रागट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संत-हरिभक्तों द्वारा संपन्न।

३० एप्रोच बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री गणपति देव

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

गणपति का अर्थ होता है गणों के पति । गण तीन प्रकार के होते हैं । देव गण, मनुष्य गण, असुर गण । देव - मनुष्य असुरों के अधिपति का नाम गणपति है । यह किसी के पुत्र या व्यक्ति का नाम नहीं है । पद-सता-अधिकार का वाचक गणपति है, जो गणों के अधिपति हैं वे ही गणेश हैं ब्रह्माजी जब सृष्टि की रचना की तब देव-मनुष्य-असुर की उत्पत्ति की, इन सभी का संचालन करने के लिये ब्रह्माजीने गणपति की उत्पति की । गणपति ही सृष्टि का नियमन करते हैं । इन्हें शास्त्रों में आदि देव-अनादि देव के रुप में वर्णन किया गया है । इसीलिये तीनों गण जब भी कोई कार्य का आरंभ करते हैं तब आदि देव गणपति की पूजा करने की परंपरा है । स्तुति विभाग में अनंत गणों के अधिपति के रुप में गणेशजी को कहा गया है । जिस तरह ब्रह्मा, विष्णु, शिव-सत्व-रज-तम गुणों के अधिपति है । इसी तरह मनुष्य - देव - दानव गण के समूह के अधिपति गणपति है । इन्हीं को अनादि कहा गया है । वह इसलिये कि शिव-पार्वती के विवाह के समय सर्व प्रथम गणेशजी की पूजा की गई थी । ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है । इसलिये सृष्टि के आरंभ से ही गणों का संचालन करने वाले गणेशजी हैं वे गणेशजी, गणपतिजी जगदंबा-जगजननी पार्वती के पुत्र के रुप में प्रगट हुए थे ।

गणेशजी की उत्पत्ति माता पार्वती के शरीर की मैल (पसीना) में से हुई है ।

एकवार पार्वतीजीने गणपति का व्रत किया तो गणेशजी प्रगट हुए । देवीजीने मागा कि हे गणेश आपके जैसा ही पुत्र प्राप्त हो । गणेशजीने वचन दिया कि हे देवी ? थोड़े समय ही स्वयं मैं आपके पुत्र के रुप में प्रगट होऊगा ।

माता पार्वती के व्रत पूर्ण होने के बाद विधिके साथ हिमालयकी औषधियों से स्नान कर रही थी उस समय उनके शरीर की मैल (पसीना) में से एक तेजस्वी-रुपवान देवपुरुष आठ वर्ष का पुत्र प्रगट हुआ । वही गणपतिजी थे । वरदान को पूर्ण करने के लिये पुत्र के रुप में प्रगट हुए । उस समय देव-गन्धर्व, अप्सरायें आकाश में आकर पुष्प वृष्टि की । वेद मंत्रो से गणपतिजी की स्तुति किये । ब्रह्मा, विष्णु, इन्दर इत्यादि देव भी उपस्थित थे ।

देवों में शनि देव गणेशजी की तरफ पीठ करके खड़े रहे । माताजीने कहा कि शनिदेव ? आप मेरे पुत्र के सामने पीठ करके क्यों खड़े है । माताजी के आग्रह से शनिदेव ज्यौं ही सम्मुख हुए त्यौं ही गणेशजी का मुख श्यामवर्ण का हो गया । यह देखकर माताजी को बहुत पश्चाताप हुआ । कोटी काम देव का रुप था श्यामवर्ण का हो गया । शनिदेव ने कहा कि मेरी जिस पर दृष्टि पडती है उस पर मेरे प्रभाव का असर रहता है ।

आदि देव जब प्रगट हुए उस समय उनकी शरीर पर पीतांबर था । किशोर अवस्था में बड़ा पेट, चार हाथ एक दंड, एक में माला, एक में पुस्तक, एक में लड्डू तथा तिलक धारण किये थे ।

मां की विन्ती से प्रगट हुए थे इसलिये मां ने उनका नाम विनायक रख दिया ।

पुत्र को श्याम मुख से उदासीन होकर माताजी को प्रसन्न करने के लिये देवों ने गणेशजी की सर्व प्रथम अग्र पूजा का अधिकार दिया । फिर भी माता का अफसोस बना रहता था । जब पुत्र विनायक प्रगट हुए तब भगवान शिव दीर्धकालीन समाधिमें से । कई पुराणों में ऐसा उल्लेक मिलता है कि भगवान शिव राम कथा सुनने गये थे ।

एकवार माताजी स्नान करने जा रही थी । उस समय माताजी ने पुत्र विनायक को आज्ञा की जब तक हम स्नान करके नहीं आयें तब तक तुम भीतर किसी को आने नहीं देना । जिस समय माताजी स्नान कर रही थी उसी समय भगवान शिव ध्यान में से उठकर वहाँ पहुंच गये । पुत्र विनायक उन्हें भीतर आने से रोके ।

भगवान भोलानाथ को हुआ कि मैं घर का मालिक मुझे ही भीतर आने नहीं दे रहा है, यह कौन है ? विवाद के अन्त में युद्ध प्रारंभ हो गया । शिव के गण युद्ध में जब पराजित हो गये, तब भोलानाथ क्रोधहोकर अपने त्रिशूल से गणपतिजी के मस्तक को धण से अलग कर दिया । उस समय पूरे त्रिलोंक में हाहाकार हो गया । भगवान विष्णु-ब्रह्मा-इन्द्रादिक देवता तत्काल प्रगट हो गये ।

कोपायमान शिवजी से प्रार्थना करते हुए कहे कि हे महादेव ! आपके हाथ आपके पुत्र का शिरच्छेद हुआ है, आप क्षमा कर दीजिये आप अहिंसा के प्रवर्तक हैं । कृपा करके अपने पुत्र को जीवन दान दे दीजिये ।

घटना की सत्यता को जानकर महादेवने भगवान विष्णु से कहा कि हे हरि ! उत्तर दिशा तरफ जाइये, जो प्रथम सामने मिले उसका मस्तक काट लाइये ।

भगवान विष्णु उत्तर की दिशा में गये, सर्व प्रथम हाथी का बच्चा मिला, जो दुर्वासा के श्राप से योग भ्रष्ट आत्मा जन्म लेकर ऐरावतजी हुआ था ।

उसी हाथी के बच्चे के शिर को सुदर्शन से काटकर गणेशजी के घड पर प्रतिष्ठित किये । भगवान भोलानाथजी अपने मस्तक के चन्द्र में से अमृत लेकर उन्हें पिलाकर अमरत्व प्रदान किये । हाथी के मुखवाले गणेशजी उस समय से ''गजानन'' नाम से प्रसिद्ध हुए । देवता लोग जयजयकार करने लगे । स्तुति करके पूजन किये । आदिनाथ गणपति पार्वती के पुत्र के रुप में विनायक का मुख हाथी का हो गया ।

पार्वती की उदासीनता को दूर करने कि लेय महादेव बोले कि हे देवी ! शनिके प्रभाव से श्याम मुख हो गया था, उस मुख को श्वेत मुख करने के लिये आपकी मानसिक प्रार्थना सुनकर यह लीला करनी पड़ी । यह सुनकर माता पार्वती का मुख उदासीनता से रहित हो गया ।

पार्वती के पसीने में से गणेशजी प्रगट हुए वह दिन भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी था । जिसे आज हम गणेश चतुर्थी के नाम से जानते हैं ।

पूजन कर्म में तैंतीस कोटि देवों में से पाच देवों को पुराणो में मुख्य कहा गया है । उनमें गणेशजी का मसामेऴ है । भगवान गणेशजी भगवान विष्णु के सात्विक अंश के कहे जाते हैं । इसी लिये उनकी प्रथम पूजा की जाती है । गमणेशजी की पूजा के विना कोई पूजा सफल नहीं होती ।

श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में भी पांच देवों के पूजा की आज्ञा की है । जिस में - विष्णु - शिव - गणपति - पार्वती - दिवाकर हैं ।

अपने इष्टदेव के आज्ञानुसार पाचं देवों में गणेशजी के प्रागट्य की कथा जाननी चाहिए । जिन्हें स्वरुपतत्व का ज्ञान नहीं, उन्हें पूजा का अधिकार नहीं मिलता - फल भी नहीं मिलता ।

पांचदेवों में से एक ही परिवार के तीन देव - शिवजी, पार्वतीजी, गणेशजी इस तरह तीन पीढी की पूजा होती है । शिवजी, गणेशजी तथा शुभ-लाभ इस तरह तीन पीढी की देवकोटि में पूजा होती हो, ऐसा एक ही परिवार है ।

गजानन - गणपति देव - विध्न हर्ता, संकट हरण इत्यादि नामों से शास्त्रों में कहा गया है ।

जो व्यक्ति कार्य के आरंभ में गणपतिजी का स्मरण करता है - पूजन करता है, उसका सभी विध्न अपने आप समन हो जाता है । गणपतिजी की उपस्थिति में देव-देवी - मनुष्य - राक्षस कोई भी विघ्न नहीं करते । कदाचित् कोई विघ्न करता है तो अपराधीको यथायोग्य दंड देते हैं । ऐसा मां पार्वती के साथ वचन में प्रतिवंद्धित है । गणेशजी के नैवेद्य में दूर्वा चढाया जाता है । दूर्वा को अमृत कलश के अमृत का छोटा पड़ा हुआ है । बहुत पवित्र वनस्पति है । इसीलिये जो दूर्वा अर्पण करता है उसकी भक्ति अमर बन जाती है । उसके ऊपर गणेशजी की प्रसन्न हो जातै है ।

नीलकंठ प्रभु की जय हो

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

सद्धर्मरक्षात्तजने सदीश प्रतापनिर्मूलदैत्ययूथ ।
पाखण्डतो रक्षितानैझभक्ता प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥१॥
निश्रेयसायैव कलौ नराणां भक्त्याः सदोपास्यमनोज्ञमूर्ते ।
अतिक्षमाब्ध्ऽतिदयानिधान प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥२॥
स्वभक्तगोलोकनयात्मनिष्ठः प्रभो सदैकान्तिकधर्मधर्त्तः ।
प्रवृत्तितक्षेमदसांख्ययोग प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥३॥
अधर्ममायाकलिकालनानादोषाशुनाशन श्रवणादिभक्तेः ।
धर्मक्रियातत्परः चारुवेष प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥४॥
महामुने योगकलाप्रवृत्ते योगेश्वरानन्तगुणप्रभावः ।
विभोः धराभीतिदः दिव्यरुपेः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥५॥
कामादज्ञाचरित्रासदः चिन्तनेश पापौघविद्रवणनामधेय ।
अज्ञानविध्वसंन बोधशक्तेः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥६॥
हरिप्रसादे हरिकृष्ण कृष्णस्वामिन् हरे तापस नैष्ठिकेन्द्रः ।
नारायणः प्रेमवतीतनुजः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥७॥
अदीनदिव्यचरितः स्वतन्त्रः ब्रह्मर्षिराजर्षिसमर्चितांघ्रेः ।
श्री स्वामिनारायणदेशिकेन्द्रः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥८॥

॥ इति श्रीमुकुन्दानंद वर्णिकृता स्तुतिः ॥

श्री स्वामिनारायण भगवान की सेवा में सर्वदा रहनेवाले तथा साथ में विचरण करने वाले ऐसे वर्णिराज मुकुन्दानंदजी ने भगवान स्वामिनारायण जब वनवचिरण करते समय वर्णी के रुप में तप किये और आचरण भी वैसा था इस पर से जीवों को उपदेश दिये कि ऐसी तपस्या करने पर ही भगवान मिलेंगे, तपस्यारुपी स्तुति इस स्तोत्र में है।

सद्धर्मरक्षात्तजने सदीश प्रतापनिर्मूलदैत्ययूथ ।
पाखण्डतो रक्षितानैझभक्ता प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥१॥

इस भयानक कलिकाल में जहाँ पापाचरण तथा अभक्ष्य का भक्षण, जीव हिंसा सहजढंग से हो रही है। ऐसे विकट समय में सद्धर्मी की रक्षा करने के लिये साक्षात् परब्रह्म परमात्मा इस पृथ्वी पर अवतार धारण करके अपने दिव्य प्रताप से दैत्यों के समूह का नाश करके दंभ-पाखंड से अपने भक्तों की रक्षा करने वाले हे नीलकंठ प्रभु आपकी जय जयकार हो ॥१॥

निश्रेयसायैव कलौ नराणां भक्त्याः सदोपास्यमनोज्ञमूर्ते ।
अतिक्षमाब्ध्ऽतिदयानिधान प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥२॥

मुमुक्षु जीवात्माओं को आत्यन्तिक मोक्ष के लिये शास्त्रों में अनेकप्रकार के उपाय कहे गये हैं। लेकिन इस घोर कलियुग में कठिन तपस्या करने में समर्थ नहीं है। इसलिये विद्वान पुरुष आपकी एकान्दिक भक्ति करके मोक्ष के साधन को प्राप्त करलेते हैं। जीव प्राणी के अपराधको क्षमा करने के लिये आप ही एक मात्र क्षमाशील है। दुःख के सागर में डूबते हुये जीवों के ऊपर कृपा करने के लिये सदा तत्पर रहते हैं। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥२॥

स्वभक्तगोलोकनयात्मनिष्ठः प्रभो सदैकान्तिकधर्मधर्त्तः ।
प्रवृत्तिसक्षेमदसांख्ययोग प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥३॥

अपने अनन्य भक्तों को दिव्य गोलोक धाम में ले जाने के लिये सदा तत्पर रहते हैं। हे प्रभो ! सदा एकान्तिक धर्म का प्रवर्तन करने के लिये स्वयं धारण करते हैं। संपूर्ण विश्व के शासन करने में समर्थ होते हुए भी अपने एकांतिक भक्तों के लिये स्वयं धर्मका वर्तन करते हैं। जीवात्माओं को सांख्यशास्त्र का ज्ञान-योग शास्त्र का ज्ञान देकर प्रचारित करते हैं। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥३॥

अधर्ममायाकलिकालनानादोषाशुनाशन श्रवणादिभक्तेः ।
धर्मक्रियातत्परः चारुवेष प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥४॥

अधर्म का आचरण करने वाले तथा मायिक पदार्थों आसक्त रहने वाले तथा कलियुग के दोषों से अक्रांत रहने वाले भक्तों के श्रवणादिक भक्ति का सहारा लेने से यज्ञ हवनादि क्रिया करने से धर्मपारायण रहने से दोषों को नष्ट कर देते हैं। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥४॥

महामुने योगकलाप्रवृत्ते योगेश्वरानन्तगुणप्रभावः ।
विभोः धराभीतिदः दिव्यरुपेः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥५॥

बड़-बड़े महामुनि अष्टांगयोग - यम - नियम - आसन - प्राणायम - प्रत्याहार - धारणा - ध्यान तथा समाधिकी कला देने में आप सदा तत्पर रहते हैं। इस तरह के अनेको योग के गुण आप में है। आपका आश्रय करने वाले निर्भय हो जाते है। सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्यापक होते हुए भी इस धरती पर दिव्य स्वरुप में विराजकर शरणागति में आये हुये के दुःख को दूर करते हैं। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥५॥

कामादज्ञाचरित्रासदः चिन्तनेश पापौघविद्रवणनामधेय ।
अज्ञानविध्वसंन बोधशक्तेः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥६॥

आपके ऐसे दिव्य स्वरुप का चिन्तन करने से जीव के हृदय में से काम-क्रोध-लोभ-मोह नष्ट होजाता है। आपके दिव्य कल्याण कारी नामों का स्मरण करने से संचित तथा क्रियमाण कर्म नष्ट हो जाता है। निष्पाप होकर भक्तलोग ज्ञान को प्राप्त करलेते है। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥६॥

हरिप्रसादे हरिकृष्ण कृष्णस्वामिन् हरे तापस नैष्ठिकेन्द्रः ।
नारायणः प्रेमवतीतनुजः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥७॥

हे प्रभु हे हमारे स्वामी श्रीहरि आप इस पृथ्वी पर धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद के पुत्र होकर हरिकृष्ण कृष्ण ऐसा नाम धारण करके नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण करके कटोर तपस्या करके ब्रह्मचारियों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नारायण आप माता प्रेमवती भक्तिदेवी के पुत्ररुप में दर्शन दे रहे हैं। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥७॥

अदीनदिव्यचरितः स्वतनन्त्रः ब्रह्मर्षिराजर्षिसमर्चितांघ्रेः ।
श्री स्वामिनारायणदेशिकेन्द्रः प्रशान्तमूर्ते जय नीलकंठः ॥८॥

हे परमात्मा श्रीहरि आपके भीतर दया-करुणा-क्षमा इत्यादि गुण विद्यमान हैं। परंतु आपके भीतर पराधीन जैसा गुण धर्म नहीं है। आप पृथ्वी के सारे वैभव का त्याग करने वाले ऋषियों को भी आश्रय देते हैं, आपके चरणों की सेवा करते रहते हैं। ऐसे हे स्वामिनारायण प्रभु आप धर्माचार्यो के प्रवर्तक - शासक-नियन्ता इन्द्र के समान है। ऐसे हे अति शांत मूर्ति हे नीलकंठ प्रभु आपकी जयजयकार हो ॥८॥

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर कल्याणकारी शुभ वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर)

श्री नरनारायणदेव देश के संत कष्ट सहन करते हुए गाँवो में धूमकर सत्संग का पोषण किया और देव सम्बन्धित दान लाकर भगवान नरनारायणदेव की आफिस में जमा करवाये थे उन सभी संतो के ऊपर प.पू. आचार्य महाराजश्री खूब प्रसन्न हुये थे । सभी संतो का नाम लेकर आइये.....आइये, जयश्री स्वामिनारायण कहकर प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से संतो को हार पहनाकर स्वयं की प्रसन्नता व्यक्त किये थे । बहुत सारे संतो को अधिक मंदिर निर्माण करने के हेतु प्रोत्साहित किये थे ।

आशीर्वचन जब प्रारंभ हुआ तब मंदिर में उत्सवीय मंडल द्वारा कीर्तन प्रारंभ किया गया था । उस कीर्तन से संभवत: सभी को सुख प्राप्त नहीं होगा । यह दिखावा वाला कार्य नहीं है । इससे देव प्रसन्न नहीं होंगे । भले कोई भगवान की पांचो आरती आता हो लेकिन वह स्वार्थ है । कीर्तन तो परमार्थ का कार्य है । वचनामृत में हम वांचते है कि श्रीजी महाराज सभा में पहले कीर्तन गवाते थे । उस कीर्तन में नाना प्रकार के बाद्य यंत्र लेकर संत स्वयं महाराज को कीर्तन सुनाते थे । जब महाराज मनाकर के कहते कि कीर्तन बन्द कीजिए और मैं एक वार्ता सुनाता हूँ । तभी कीर्तन बन्द होता था ।

महाराज की आज्ञानुसार जब कि श्री नरनारायणदेव की गादी पर श्री नरनारयणदेव का ही स्वरुप विराजमान है । ऐसा विवेक रखने में ही उनकी प्रसन्नता है ।

वचनामृत के आधार से यह परिवर्तन हो सकता है कि उत्सव मंडल सभा में आगे बैठकर कीर्तन करे । जब सभा प्रारंभ हो तब अपना कीर्तन बंद करके सभा में संतो का तथा प.पू. आचार्य महाराज का प्रवचन सुने इसीको विवेक कहा जायेगा ।

श्री नरनिारायणदेव के सानिध्य में हम सभी लोग एकत्रित हुये हैं । इस सभा में आप लोग हमारी प्रसंशा करें और हम आप सभी की प्रसंशा करें यह ठीक नहीं इसकी अपेक्षा पहले अर्थात् महाराजके समय में जिस तरह संत गाँवो में घूमकर कथा प्रवचन के माध्यम से सत्संग करते वैसा आज होने लगे । और जो संत-ऐसा कार्य करें उसी का सभा में संमान हो ।

आदिवाडा के संत के सन्मान प्रसंग पर इस विस्तार में दो चार गाँव प्रसादी के हैं । मंदिरो में प्रसादी की वस्तुएं है । जब वहाँ जाने का अवसर आवे तो ऐसा लगता है कि बड़े मंदिरो में चाकचीक्य अधिक है गाँवो में कम है । गाँव में १५ X १८ का मंदिर हो, छोटा सिंहासन हो, भगवान की मूर्ति हो तो उससे विशेष सुख मिलता है । श्रीरंग स्वामी के सन्मान प्रसंग पर इतना अवश्य कहना है कि अपने बड़े संत इतिहास के जैसे हैं । अपने अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी गुरु के रुप में हमें हार पहनाने आवें तब हमे ऐसा लगता है कि गुरु के रुप में तो आप ही हैं । कारण यह कि आपसे हम कुछ सीखे हैं । बड़े संत तथा हरिभक्तों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है । इसी तरह छोटों से बहुत कुछ जानने को मिलता है ।

इन सभी संतो का खूब अभिनन्दन । इन संतो को सत्संग की, महाराज की, हरिभक्तों की खूब चिंता हैं । इसी लिये के गाँव का नाम तथा हरिभक्त का नाम लिखाते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि आपके इतने ही संत हैं । तब मैं कहता हूँ कि एक संत हमारे ४० संत का कार्य करते हैं ।

अंक से दुनिया नहीं चलती । बड़ी फौज से या अधिक वस्तु से कुछ भी नहीं होता व्यवस्थापक अच्छा होना चाहिए । एक गाँव में कोठारी हरिभक्त की मीटींग में वात हुई कि श्री नरनारायणदेव की संस्था के नीचे गाँवो के ३५ मंदिरों का प्रोजेक्ट चालू है । छोटे-छोटे मंदिरो की तो कोई गिन्ती ही नहीं है । ओस्ट्रेलीया के मेलबोर्न में एक मंदिर का कार्य हो रहा है वहाँ मैं जाने वाला हूँ प.पू. लालजी महाराज के जन्म दिन पर मैं यहाँ नहीं हूँ, शारीरिक ढंग से वहाँ रहूँगा लेकिन मानसिक ढंग से यहाँ सभा में सभी के साथ रहूंगा । इसलिये इस उत्सव का कार्य बड़े बापजी को सौंपकर जाऊगा । अभी एक उत्सव में लालजी महाराज के साथ ३०० जितने बालक सत्संग का लाभ ले रहे है । अर्थात् यह पद कोई मजा मस्ती करने का पद नहीं है । यह पद हमारे विना (श्रीनरनारायणदेव के विना) गुरु कोई अन्य नहीं हो सकता । दुनिया में तकलीफ यहा है कि गुरु कहलाने के लिये, गद्दी पर बैठना, हार पहनना, मजा करना, लोग आकर पैर छूयें, बाद में गुरु जिसे जैसा चाहें वैसा उपदेश करें, जैसा कहें वैसा चले । स्वामिनारायण संप्रदाय में ऐसा नहीं है । संत-हरिभक्त के साथ की परंपरा महाराज ने बड़ी दृढता से बनाई । मंदिर होगा तो देव का तथा सत्संग का उत्कर्ष होगा । बात ऐसी है कि अमेरिका में ९ मंदिरों का काम चालू है, आपको इसका ख्याल होगा कि ''देवस्य'' नामका जो प्रोजेक्ट है वह ५२५ एकड जमीन मैं तैयार होने वाला है । डिजनीलेन्ड की अपेक्षा चार गुना अधिक है । अभी अमेरिका में २४ मंदिर है । ओस्ट्रेलीया में ५, यु.के. में १२, स्वीडन युरोप इत्यादि देशों में अपने मंदिर है । यह वात इस लिये किये कि इस प्रगति से भविष्य में आप सभी को तथा आपकी भावी पीढी को गर्व होगा कि हम श्री नरनारायणदेव की संस्था के भाग रुप हैं । हम किसी के जेब में हाथ नहीं डालते, हम किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते यह किसी से नहीं कहते कि आप यहाँ पर ५००-, ५०००/-. ५०,०००/- उपये को लिखवाइये । पुनः कहता हूँ कि आप १० रुपये १०० रुपये या इससे अधिक रुपये की भेंट देते हैं वह आप सभी के लिये तथा भावी पीढी के लिये क्रियान्वयन हो इसका हम ध्यान रखते हैं । अन्यत्र तो कुछ अन्य ही है, सभा में प्रवेश करने के लिये लोग ड्राफट पहले मांग लेते हैं । बाद में सभा में प्रवेश मिलता है । यह नरनारायणदेव का दरबार है जहाँ पर पैसे से कोई तौल नहीं सकता । अभी एक व्यक्ति आकर कहा कि, आप लंडन आइये प्रथम वर्ग का टिकट कराकर देते हैं, आप जहाँ कहेंगे वहाँ सेवा करेंगे । मैंने कहा कि आप गलत जगह आ गये हैं, आचार्य को खरदीने निकले हैं, आप किसी फालतू के पास चले जाइये । लाखो रुपये चाहिए तो हम तुम्हारे समस्तक पर डाल देंगे, मेरे पास नहीं है । मेरे पास ऐसे हरिभक्त हैं जो आत्म समर्पित भाव वाले हैं । सत्यता तो यह है कि श्री नरनारायणदेव के प्रांगण में - दरबार में कोई भिखारी नहीं है अपने नंद-संतो के बाद अथवा उस समय ब्रह्मानंद स्वामी, आनंदानंद स्वामी के पास कितना साम्राज्य था । सोना, चांदी, हीरा, माणेक, अलंकार कितने थे । शास्त्रो में लिखा हुआ इतिहास है कोई दंत कथा नहीं है । लेकिन महाराज मिले तो सब कुछ छोडकर एक मात्र हाथ में झोली ले लिये । महाराज की आज्ञा हुई तो जिस रुप में जो रहता उसी रुप में साथ चल देता । उन्हें अपना कुछ नहीं था, जो कुछ था वह महाराज की प्रसन्नता में था, आज्ञा में था ।

बात यह है कि श्री नरनारायणदेव का दरबार या देव के आश्रित को कोई पैसे से तोल नहीं सकता । बहुत सारे प्रोजेक्ट हुये । म्युजियम बना, उत्सव हुये कोई काम कभी रुका नहीं । मोटा प्रोजेक्ट न्युयोर्क में कुल ८ मिलियन डोलर, ''देवस्य'' २० मिलनय डोर अर्थात् २०० लाख । १ मिलियन १० लाख । मुझे बहुत गणित नहीं आती । जब परीक्षा देता तब गणित रट करजाता था । गणित रटने का विषय है क्या ? फिर भी १०० में ७० मार्क तो आही जाता । सत्य तो यह कि सत्संग का पढा ही

काम आनेवाला है। आप अपने बालक को धक्का मारकर स्कूल पहुँचा आते हैं। इसी तरह सत्संग में प्रवृत करना चाहिए। हम भी १३-१४ वर्ष की उम्र से गाँवों में सत्संग के लिये जाते थे। बाद में युवक मंडल चालू किया। सभी उस में छोटे-बड़े आते। साथ में संत होते, उस समय का रास्ता बहुत खराब होता। दूर दूर के गाँवो में जाते वहाँ पर रात्रि का १-२ बज जाता था। इसीलिये हमलोग साथ बैठे हुए हैं। यदि सीखने लायक कुछ है तो वह भगवान- सत्संग है। आजीविका के लिये सभी वस्तु आवश्यक हैं। अपनी संस्था के नीचे १५-१६ शौक्षणिक संस्थाये चलती है।

बात यह थी कि १ मिलीयन = १० लाख २०० लाख हुआ ? २ करोड यह आप निश्चित कीजिये ! हमें कन्फ्युज करा रहे हैं। (बाद में प.पू. लालजी महाराजने उत्तर दिया कि, २ करोड डोलर का प्रोजक्ट है, बोलो, २ करोट डोलर ? न्युयोर्क जैसे ९ प्रोजेक्ट चालू हैं, २०० करोड का अलग है। छोटे-बड़े गाँवो में जितने कार्य चल रहे हैं उस के लिये श्री नरनारायणदेव की संस्था ने साढे छब्बीस करोड़ रुपये दिया है। यह बात का ख्याल है आपको ? जो कुछ है वह सब आप सभी का है। हाँ आपके पैसे का सदुपयोग हो यह देखना गुरु का काम है। गुरु बनने में कोई फायदा नहीं है। इस पद की गरीब का सदा ध्यान रखना पड़ता है। कोई अपराधन हो जाय इसका भी ध्यान रखना पडता है। जितना पुरुषार्थ संत करलेते हैं उतना हमसे नही होता। हरिभक्त भी अपना समय, पैसा, शरीर, तन, मन, धन देव के लिये अर्पित कर देते हैं। अन्यथा २०१७ की साल में किसको किसकी पडी है। हमें भीड़ में मजा नहीं आती। लेकिन इस वात का गर्व है कि पर्व के अवसर पर इतने हरिभक्त देव दर्शन के लिये एकत्रित होते हैं। अभी लालजी महाराज से मैने कहा कि आज से २५-३० वर्ष पूर्व आपभी जानते हैं कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मंदिर में जगह मिल जाती थी। जब कि आज जगह बैठने के लिये नहीं मिलती। इससे यह स्पष्ट होता है कि बेटा बेटी को देव के प्रतिममत्व बढा है। गुरुपूर्णिमा तो मात्र बहाना है। हमारा जो पद है वह देव के लिये है। जो भी करना है वह देव के लिये करना है। इसके लिये हमें हार-इत्यादि की जरुरत नहीं होती। भाषण करना नहीं है लेकिन आप लोगों के प्रति इतना अधिक ममत्व है कि बोलना ही पडता है।

मैं उपदेश को नही मानता। परंतु सभी से इतना अनुरोधहै कि आप लोग देव का कभी परित्याग नहीं करेंगे। अपने बेटा-बेटी के साथ रगडे-झगडे में मत पडियेगा। तूं इतना मार्कस लाना, इतना सोना, इस तरह करना, उस तरह करना। यह सभी का त्याग करें समय आने पर बच्चे समझ जायेगें। मात्र आप उन्हें संस्कार दीजिये और सत्संग में आइयेगा। इससे उनके भीतर अवश्य परिवर्तन होगा। स्वयं चार-पांच जगह जाते हैं, लाल-पीला धागा बान्धते हैं। शनि, रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु की अंगुठी पहनते हैं, तो बालक भी आपसे क्या अपेक्षा रखेंगे। कितने लोग बड़ी-बड़ी वात करते हैं लेकिन घर में कुछ और ही होता है। मंदिर में जितनी परिपक्व निष्ठा होगी उतनी असर करेगी और (बच्चे भी निष्ठावान बनेंगे। जो कुछ है, वह देव का है, ऐसा भाव रखना चाहिए . आपसी सहयोग की भावना से ही उन्नति संभव है। भगवान अपने साथ है। संतो का अभिनंदन। आप सभी ताली बजाइये। लोग देव से अलग न करें इसका सदा ध्यान रखना चाहिए। मान-सन्मान-अच्छा भोजन से लोभायमान नहीं होना चाहिए। यहाँ आप लोग लाईन में खडे हैं कोई आवेगा और कहेगा कि यहाँ लाइन में क्यों ख़डे हैं ? हमारे साथ आइये आपको लाईन में खडा नहीं पडेगा, ऊपर से सन्मान भी होगा। अच्छा भोजन भी मिलेगा। महाराज तो अपनी गांढ के खर्च की बात कहे हैं। मैं ऐसा नहीं कहता कि आप लोग टिफिन लेकर आइएगा। यहाँ भी व्यवस्था तो होती ही है। प्रेम से भोजन कीजियेगा। परंतु देव के अलांवा कहीं भी लुभाना नही चाहिए, इसका सदा ख्याल रखना। महाराज आप सभी का मंगल करें।

ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

शिव पार्वती की मूर्ति होल नं. १

आज धर्म में सहिष्णुता की जगह पर धर्मजनून ने लेलिया है। अन्यत्र आदर देने की जगह पर स्वयं को आदर पाने की चाहना बलवान होती जा रही है। श्रीहरिने सदाचार ही धर्म है ऐसा सभी का मूल है ऐसा प्रचलित किया। सभी धर्म का आदर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय द्वारा किया जाता है। सीख, इसाई, जैन-मुसलमान सभी लोग विना कीसी प्रतिबन्धके स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हुए हैं।

शिक्षापत्री श्लोक ४६ के अनुसार ब्राह्मण त्रिपुंड तथा रुद्राक्ष की माला का परित्याग न करें। श्लोक ४७ के अनुसार नारायण तथा शिव में एकात्मपना समझना, श्लोक २३ के अनुसार शिवालयादि को आदरपूर्वक नमस्कार करना, श्लोक ८४ के अनुसार शिव-पार्वती पंचदेव को पूज्य भाव से मानना, श्लोक १४९ के अनुसार श्रावण मास में बिल्व पत्रादि से शिवजी का पूजन करना, श्लोक ९६ के अनुसार शिवरात्री का व्रत करना। इत्यादि आज्ञाओं को ही भगवान स्वामिनारायण की अन्य संप्रदायो के लिये आदर की भावना व्यक्त करती है तथा सहिष्णुता का सच्चा उदाहरण प्रदर्शित करती है।

यह संप्रदाय आचरण का है। शिव-पार्वतीजी की मूर्ति जूनागढ मंदिर में भी प्रतिष्ठित की गई है। अमदावाद में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में शिवलिंग है। श्रीहरि के आज्ञानुसार शिव पार्वतीजी की महिमा को समझने से अन्याश्रय का दोष नहीं लगेगा।

कोठंबा में गाँव में श्रीहरिने स्वंय शिव पार्वतीजी की मूर्ति की पूजन किया था। उस प्रसादी की मूर्ति का दर्शन यहाँ म्युजियम में हो रहा है। पार्वतीजी तो जगत जननी स्त्री शक्ति आद्य स्वरुपा है। शिवजी तो सदा समाधिस्थ रहते हैं। इस तरह जिनकी पूजा अर्चना स्वयं श्रीहरिने की है उस मूर्ति के दर्शन का अहोभाग्य हम सभी को मिला है। इस मूर्ति का भाव से दर्शन कीजियेगा। जो शिवजी नीलकंठ वर्णी को वन में सत्तू खिलाये वही शिवजी श्रीजी के हाथों से पूजित होकर यहाँ इस म्युजियम में अखंड रूप से विराजमान है, इनकी महिमा समझकर आपलोग दर्शन किजियेगा।

– प्रो. हितेन्द्रभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जुलाई-१७

रु। २,२५,०००/-अ.नि.प.भ. श्री नंदलालभाई कोठारी (भालजा मंडल) अमदावदा चतुर्थ पुण्यतिथि आषाढ कृष्ण-४ के निमित उनके चाहने वाले सभी हरिभक्तों की तरफ से।

रु। ११,०००/- अरुण दढाणीया - जयपुर।

रु। ५,००१/- घनश्यामभाई अंबालाल ठक्कर - शाहपुर अमदावाद।

रु। ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल।

रु। ५,०००/- एक हरिभक्त - घाटलोडिया।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - जुलाई-१७

ता. १३-०७-२०१७ दक्षाबहन तथा जीतेनभाई वघासिया - नारणपुरा तथा निशाबहन तथा दीपेनकुमार पटेल - अमेरिका।

ता. २०-०७-२०१७ हरीशभाई शामजी वरसाणी - माधापर कच्छ - वर्तमान में बोल्टन - ध.प. हीनाबहन तथा पुत्री घुसा पुत्र सिवान

ता. २३-०७-२०१७ (प्रातः) दिलीप खीमजीभाई हालाई कृते खीमजीभाई भीमजी हालाई तथा पुष्पाबहन तथा मीता हीरन।

(दोपहर) श्री घनश्याम महिला मंडल - हिंमतनगर कृते महंत स्वामी हिंमतनगर स्वामिनारायण मंदिर।

ता. २९-०७-२०१७ श्री राजेशकुमार भक्तिभाई पटेल - घाटोलडिया।

ता. ३०-०७-२०१७ (प्रातः) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - न्यु राणीप।

(दोपहर) श्री परसोतमदास जोईताराम पटेल (दासभाई) माणसावाला - अमदावाद।

(सायंकाल) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - साबरमती।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जेतलपुरधाम का हिंडोला

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

झुलावुं धीरे नाथजीने झुलावुं धीरे
झरमर झरमर मेहुलो वरसे,
गरजे गंभीरे, नाथजीने झुलावुं धीरे ।

आषाढ महीना आवे, मेघ की गर्जना होने लगे, मोर कें कारव करे, बरसात वरसता हो तथा चारो तरफ हरियाली ही हरियाली हो, उस समय भगवान के भक्तों को क्या याद आती है ? भगवान की याद आती है । भगवान को सुन्दर हिन्डोला (झूला) के उपर भक्त अपने भाव से झुलाते हैं।

ऐसा ही उत्साह-हृदय का भाव जगा है जेतलपुर के भक्तों का । जेतलपुर के आसजीऊाई आदि अनेक हरिभक्तों को विचार हुआ कि बड़ा यज्ञ पूरा हो गया अब प्रभु को झूले में झुलाते हैं ।बाद में सभी भक्त तैयार हो गये । बगीचे में एक वट वृक्ष था । उस वृक्ष पर झूला डाल दिये । उसके चारों तरफ इतना सुन्दर सजा दिया गया कि देखते बनता था । रेशमी वस्त्र से उसे अलंकृत किया गया था । झूले के ऊप कोमल गद्दी - तकिया रखी गई थी । भक्त लोग महाराज के पास जाकर विन्ती करने लगे कि हम महाराज आप हम सभी के मनोरथ को पूरा कीजिये । हम सभी की यह इच्छा है कि आप झूले पर बैठे और हम लोग आपको झुलावें । भगवान झूले पर विराजमान हो गये भक्त लोग डोरी खींचने लगे, संत-भक्त कीर्तन-गीत गाने लगे, ऐसा लग रहा था जैसे कोई भक्ति रस उभर रहा हो । श्रीहरि भक्तों की विन्ती स्वीकार करके बाद में सभा में जाकर विराजमान हो गये । सर्वत्र जय जयकार हो रही थी । कृपालु श्रीहरि भक्त समुदाय के बीच में से चलकर झूले पर आगये ।

आज के दिन भक्त लोग बहुत हार लाये थे । कोई गुलाब का लाये थे, कोई गुलदावाली का लाये थे कोई हजारी का लाये थे, इस तरह अने को प्रकार के हार भक्त लोग लाकर भगवान को अर्पित किये थे । झूले पर झूलते हुए महाराज कितने लोगों के हार को स्वीकार किये और अपने गले में धारण किये और कितने लोगो के हार को उसी झूले पर रख दिये । हार इतना अधिक हो गया कि जैसे पुष्पहार का अम्बर हो गया हो ।

इसके बाद सबसे बड़े संत आनंद स्वामी खड़े हुए । स्वामीजी झूले को झुलाने लगे, दोरी पकड़ कर धीरे धीरे झूले को हिलाते । सोमला खाचर तथा सुरा खाचर - चामर लेकर हिंडोला के दोनो तरफ खड़े होकर डुलाने लगे । उसी समय दूसरे भक्त वाद्य यंत्र बजाने लगे ।

कीर्तन गाने लगे -

झूलो हरि हिंडोले व्हाला,
नटवर नंदतणा लाला........झूलो0
सरस ऋतु श्रावण नी सारी,
झुलावाने आती व्रजनारी,
झूलो प्यारा प्रीतम गिरधारी........झूलो0
झुलावुं हेत करी रसिया,
तमे मारा अंतरमां वसिया,
प्रेमानंदना प्यारा रसिया........झूलो0

भगवान झूल रहे थे और संत-हरिभक्तों का हृदय भी उसी के साथ झूल रहा था । पुष्पों की मानो वृष्टि हो रही थी ।वही फूल-हार लेकर संत सभा में भक्तों के ऊपर फेंकने लगे ।

जिसके ऊपर हार गिरजाता था वह अपने को भाग्य शाली समझता था । असंख्य हरिभक्त सभा में थे किसे हार पहनाया जाय इसलिये प्रसादी के हार को सभा में फेकने लगे । जिसे मिला वह भाग्य शाली ।

प्रिय मित्रो ! ऐसे सुंदर झूले के ऊपर भगवान को विराजान करके आज भी अपने मंदिरो में झुलाया जाता

है। दर्शन करके जीवन को धन्य बनाने से भूलियेगा नहीं। अर्थात् दर्शन करके जीवन को धन्य बनाइयेगा।

●

विशेष नियम का चमत्कार

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

अहो हो..... कितना सुंदर समय है। वर्षाऋतु को सात्विक ऋतु कहा जाता है। इस वर्षाऋतु के काल को चातुर्मास कहा जाता है, इस समय विशेष भजन-भक्ति का समय कहा जाता है। इष्टदेव की इस समय विशेष आज्ञा की गई है। चातुर्मास में विशेष नियम लेना चाहिए। आप सभी हरिभक्त विशेष नियम लिये होंगे जिसका नियमित पालन भी करते होंगे।

नियम की बात पर एक अच्छी कथा का स्मरण हो आया।

चार मित्र थे। मित्र सामान्य नहीं थे, लेकिन वे अच्छे मित्र थे। वे चारो मित्र अलग-अलग नियम लिये।नियम लेते समय इसका ध्यान रखे कि सरलता से जिसका पालन हो सके वही लेना। पहले मित्र ने नियम लिया कि हम भात नहीं खायेंगे। उसकी स्थिति इतनी खराब थी कि वह चावल खरीद नहीं सके। दूसरे मित्रने भी नियम लिया कि "विना स्नान किये भोजन नहीं करेंगे" उसके घर के नजदीक में ही नदीं बहती थी, उसे स्नान करना बड़ा सरल था। अब तीसरे का नंबर आया उसने नियम लिया "हम लसुन-प्याज नहीं खायेंगे।" वह शाक-भांजीका व्यापारी था। अब चौथे मित्र का नंबर आया, वह बड़ा चालाक था। उसकी गणना बड़े शेठों में होती थी। वह सेठ बड़ा विचार किया बाद में नियम लिया "किसी को अनाज, पासी, पैसा या किसी प्रकार का दान नहीं करेंगे।"

समय वीतने लगा। सभी मित्र अपनी अनुकूलता के अनुसार नियम का पालन कर रहे थे इसका सभी को आनंद था। एक हसा दश दिन का समय अच्छी तरह बीता। भगवान को इनके नियम पालन करने की परीक्षा लेने का मन हुआ।

वे चारो मित्र जिस गाँव में रहते थे वहाँ के नगर सेठके बेटे का विवाह हुआ। नगर सेठ की तरफ से सभी गाववासियों को भोजन का निमंत्रण था। भोजन समारंभ का भव्य आयोजन किया गया था।

अनेक प्रकार के व्यञ्जन बनाये गये थे। प्रथम मित्र भोजन समारंभ में उपस्थित था। प्रत्येक प्रकार के भोजन में भात तथा दाल सभी के ध्यान को खींच रही थी। उत्तम क्वालिटी का बासमती से बना भात देखकर उसके मन में हुआ कि – मैं भात नहीं खानेका नियम तो लिया हूँ – लेकिन इतना सुंदर अवसर छोड़ा जा सकता है क्या ? वह भात का भोजन स्वीकार कर लिया। रिजल्ट आ गया – अनुत्तीर्ण।

अब दूसरे मित्र की परीक्षा प्रारंभ हो गई – उसके घर के समीप में नदी बहती थी, उसके ऊपर बांधबांधदिया गया। पानी आना बंद हो गया। नदी सूख गई। पानी की जगह पर रेती दिखाई देती थी।

अब कौन दूर जाय नहाने के लिये। यह विचार करके उसने स्नान करना बन्द कर दिया। उसका भी परिणाम आ गया। अनुत्तीर्ण।

अब तीसरे मित्र का नंबर आया। जहाँ से उसकी शाग-भांजी आती थी उस विस्तार में खूब बरसात पड़ गया। इतना अधिक बरसात हुआ कि शाक भांजी सब डूब गया। जो किसी तरह से बचा वह था लसून-प्याज। वह मित्र विचार करने लगा कि अब क्या करें ? नियम की ऐसी तैसी लसून-प्याज खाने लगा। उसका भी परिणाम आ गया – अनुत्तीर्ण।

भगवान की परीक्षा में तीनो मित्र अनुत्तीर्ण हो गये। अब चौथे मित्र जो व्यापारी था, शेठ था उसका नंबर आया। वह बुद्धिशाली तो था लेकिन उसका नियम ऐसा था कि उसे किसी प्रकार की लालच या प्राकृतिक

आपत्ति उसकेनियम में अवरोधनहीं कर सकती थी । भगवान अब उस चौथे मित्र की परीक्षा लेने का विचार किये । उस सेठ का लड़का तथा स्वंय शेठ एक जगह बैठकर बात कर रहे थे । उसी समय भगवान ब्राह्मण के वेश धारण करके वहाँ आ पहुँचे । ब्राह्मण को भिक्षा मांगने आता देखकर शैठने अपने पुत्र से कहा कि ''इस ब्राह्मण को कुछ देना नहीं है । मुझे अपने नियम का पालन करना है । शेठ के लड़के ने ब्राह्मण से भिक्षा नहीं देने की वात की, फिरभी ब्राह्मण वहाँ खड़ा रहा ।

सेठ को विचार आया कि लगता है कि यह ब्राह्मण विना कुछ लिये नहीं जायेगा । यदि में मरने का खेल करुं तो ब्राह्मण चला जायेगा और हमारा नियम बच जायेगा । शेठ अपने पुत्र से कहा कि नियम पालन करने के लिये मरना पसंद करुँगा । लेकिन नियम छोडूंगा नही । मैं मरने का ढोग करता हूँ तुम रोना चालू करो । शेठ ऐसा गिरा जैसे सही में वह मर गया हो । यह देखकर बेटा फूट फूटकर रोने लगा । सामने ब्राह्मण भी बड़ा दृढता से वही खड़ा रहा । उसने बाहर से ही आवाज दिया कि क्या हुआ ? शेठ की मृत्यु हो गई - बेटा रोते-रोते कह रहा था । यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि मैं भी तुम्हारे साथ शैठ के अग्नि संस्कार में स्मशान आऊँगा पुत्र ढोंग करते हुए अपने पिता के पास आकर कान में कहा कि - ब्राह्मण तो स्मशान में भी आने को तैयार है, अब क्या करें ? शेठने इशारे से कहा कि ''मैं मरने के लिये तैयार हूँ । मुझे बांधकर स्मशान ले चल । मुझे नियम नहीं तोडना है । गाँव में खबर हो गई कि शेठ मर गया है । इसलिये सभी गाँववासी साथ मिलकर स्मशान गये । वह ब्राह्मण भी सभी के साथ स्मशान आया । शेठ को चिता पर रख दिया गया । अब पुत्र की चिन्ता बढने लगी । पिता की विन्ती करते हुए कहा कि - अब बैठ जाइये, फिर भी शेठ ने कहा कि ''तूं अग्निलगा । जब बेटा अग्नि लगाने की तैयारी की उसी समय ब्राह्मणने उस बालक का हाथ पकड लिया और आग को बुझा दिया । ब्राह्मण का वेश त्याग कर परमात्मा मूल स्वरुप में आकर शेठ को दर्शन दिये ।

मित्रो ! आप देखे न, तीन मित्रों को अनुत्तीर्ण कर दिये । लेकिन चौथे मित्र का नियम अच्छा नहीं था तो भी वह उसी नियम पर अडिग था । मरने के लिये तैयार था लेकिन निमय छोडने के लिये तैयार नहीं था । इसी से प्रभु की प्राप्ति हुई । भगवान प्रत्यक्ष उसे दर्शन दिये । यदि ऐसे नियम को भी शेठने अडिग होकर पाला और भगवान को आना पडा, दर्शन देना पड़ा, तो अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा का पालन शिक्षापत्री में बताये गये नियम को दृढता से पकड़े रहेंगे तो भगवान की कितनी प्रसन्नता होगी ।

इस वात का निरन्तर ध्यान रखकर नियम का दृढतापूर्वक पालन करेंगे तो जीवन धन्य हो जायेगा । जो कोई विशेष नियम लेना भूल गया हो तो इस लेख को पढकर आज से नियम लेकर अपने इष्टदेव श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये तटस्थ होजाइये ।

वेबसाईड तथा फेसबुक में संप्रदाय के विशिष्ट कार्यक्रम रखने के सन्दर्भ में

सभी संत-हरिभक्तों को बताना है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अपने श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव, कथा पारायण, युवा शिबिर, उत्सव इत्यादि धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रम की डिजाईन बनाकर अपने अमदावाद कालुपुर मंदिर की वेब साईड तथा फेसबुक में प्रकाशित करने के लिये नीचे के E-Mail ऊपर संपर्क करें ।

muni99099@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "किसी भी परिस्थिति में कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिये"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम जो भी कार्य करते है वहर शरीर में शक्ति होने पर ही कर सकते हैं। इसलिये शरीर की शक्ति आवश्यक है, इसी तरह आत्म शक्ति की भी उतनी ही आवश्यकता है। जिस तरह स्थूल शरीर में शक्ति का कम वेशी होना पाया जाता है, इसे कैसे जाना जा सकता है - तो अपने अन्दर दया-,सन्तुष्टि, शांति, परोपकार, शुद्ध आचरण अब इनका विस्तार होता है तब आत्म शक्ति बढती है। इसी तरह अपने भीतर लालच, ईर्ष्या, क्रोधइसकी जब वृद्धि होती है तब समझना चाहिए कि आत्मशक्ति घट रही है। दूसरी बात यह है कि जब हम किसी से अपेक्षा रखते है तब आत्म शक्ति घटती है। अपने मन में कभी ऐसा भी होता है कि सामने वाला व्यक्ति मेरी वात समझे ऐसी अपेक्षा होने पर जब वह नहीं समझता तब आपकी आत्मशक्ति घटती है।

जिस तरह अपनी शरीर में से कोई अंग दूखता है तब शारीरिक शक्ति घट जाती है। इसी से मनमें भी दु:ख होता है और परिणाम स्वरुप आत्म ऐश्वर्य कम हो जाता है। इसलिये हमें चाहिए कि कभी भी किसी के पास कोई अपेक्षा न रहे। यह देखते रहना चाहिए कि हमारी आत्म शक्ति घट रही है या बढ रही है। जब शरीर का चेकअप कराते हैं तब ख्याल आता है कि शरीर में कहाँ क्या कम है या अधिक है। वही शक्ति को क्षीण करने का कारण है। जब डॉ. से जानकारी हो जाती है। यह रोग है वहाँ से ही आत्मशक्ति घटने लगती है। आत्मशक्ति को बढाने का उससे अलग रास्ता ढूंढना होगा। हताशा न आवे इसका ध्यान रखना होगा। अपने से कोई अच्छा कार्य हो गया हो तो उसे भी भूल जाना चाहिए . क्योंकि कितने सत्कार्य भी दु:ख के कारण बनते हैं। जिस तरह किसी व्यक्ति को उसके दु:ख में सहयोग किये और आपके ऊपर जब दु:ख आता है तब वह सहयोग नहीं करता तब आपके मन में ऐसा होता है कि इसके दु:ख में मैं सहयोग किया और मुझे क्या मिला ? इसलिये अच्छा कार्य करके भूल जाना चाहिए। याद करने से दु:ख होगा। इससे आत्म शक्ति घटेगी।

पूरे दिन में अपनी मनोदशा बाह्य परिस्थिति पर निर्भर करती है। अलग-अलग प्रकार के लोग मिलते है, उसी प्रकार अनुभव होता है। कोई प्रेम से बुलाता है, कोई बड़े क्रोधमें बुलाता है, कोई दु:ख के साथ बुलाता है, कोई रोते हुए बुलाता है। थोडे ही समय में सबकुछ डगमग हो जाता है। सभी व्यक्ति के ऊपर क्रोधभी आता है। यह सब बाह्य परिस्थिति के कारण होता है। जब दु:ख लगता है तब आत्म शक्ति घट जाती है। अपने मनके नियंत्रण हेतु दूसरों को काम नही देना चाहिए ? अपने मन का नियंत्रण स्यवं को करना है, तभी आत्म शक्ति बढेगी।

किसी भी परिस्थिति में प्रतिक्रिया करने की तैयारी करेंगे तो आत्म शक्ति बढेगी। जैसे टी.वी. का रीमोट दूसरे को देदिया जाय तो वह जैसा चाहेगा वैसा चेनल चलायेगा, अनचाहे में भी वही देखना पडेगा। जैसे कोई अपशब्द बोला उस व्यक्ति के लिये जितने लोग होंगे सभी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। कुछ लोग शांत होजाते है और कुछ लोग समय आने पर उत्तर देते हैं

। यही प्रतिक्रिया है जिसे यथा समय उत्तर दिया जा सकता है । लेकिन प्रत्येक स्थिति में समभाव रखना चाहिए । हम जड नहीं है चेतन हैं । कितने लोग ऐसे होते है जो थोड़े में दुःखी हो जाते हैं । तो हम कहते हैं कि महा जड़ है, इसका मतलब यह कि उसका कोई विकल्प नहीं है । जिस तरह मशीन यंत्र है, वह स्वीच से चलती है । इसी तरह हम भी । हमारे भीतर भी एक अदृष्ट शक्ति है जो बिजली की तरह काम करती है । इसलिये मन को दृढ रखना पड़ेगा । कभी ऐसा होता है कि विना प्रयोजन के भी क्रोधित हो जाते हैं । इसका परिणाम अच्छा नहीं आता । बिगड़ जाता है । जब ख्याल आता है तब तक काफी बिगड गया रहता है, फिर मन में होता है कि शांति से बैठे रहे होते तो इतनी परिस्थिति बिगड़ी नही होती । खराब बोलने की जल्दी पडी रहती है, इसका परिणाम खराब हो जाता है । कभी ऐसा भी होता कि मेरे मौन रहने का यह परिणाम हुआ, इसकी प्रतिक्रिया पहले कर दिये होते तो सायद ऐसा नही होता । अपनी अज्ञानता के कारण ही सभी होता है ।अपने विचारने की शक्ति खम होजाती है । प्रतिक्रिया के लिये मानसिक चिन्तन की आवश्यकता होती है । परमात्मा के यहां न्याय है । परमा त्माके प्रतिनिष्ठा होनी चाहिए । हमें क्या करना है, उसे शांति से विचार करना चाहिए । ऐसा करने से ५०% प्रतिशत गलत काम बन्द हो जायेगा । सभी में परमात्मा आत्मशक्ति दे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

अभिमान नरक का द्वार है

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

अभिमान शब्द मात्र शब्द को अभि उपसर्ग लगाकर बनाया गया है । मान में दोष है । परंतु वही मान दूसरो को को दिया जाय तो वह सन्मान है । सन्मान से कीर्ति में वृद्धि होती है । वही मान की यदि स्वयं मे अनुभूति होने लगे तो वह ''अभिमान'' कहलाता है । अभि उपसर्ग का पर्याय होता है कि मान की स्वयं की तरफ वृद्धि होने पर वह अभिमान हो जाता है । अभिमान एक भयंकर दोष है । अभिमान के पर्यायवाची अहंकार, दर्प, गर्व, मद, अहंम, मान आदि है ।

अभिमान ही सभी दोषो की जननी है । उसी में से सभी दोष उत्पन्न होते है । भवान श्री स्वामिनारायण ने लोया के छठे वचनामृत में कहा है कि देहाभिमान सबसे बड़ा है । उसी में सभी दोष है । उसका त्याग करने मात्र से सभी दोषो का त्याग हो जाता है । भगवानने कहा है कि देहाभिमानी व्यक्तिका कभी संग नहीं करना चाहिए । क्योंकि ऐसे व्यक्ति के संग से हमारे अंदर उसके अनेक दोष, अवगुण आ जाते है । अभिमानी व्यक्ति को सत्य असत्य का विवेक नहीं रहता । उसकी आँखो में अहम की ऐसी परत होती है कि उसे सत्य भी असत्य लगता है । अभिमान को सज्जन भी दुर्ज्जन प्रतीत होता है । अभिमानी को प्रशंसा करने वाला व्यक्ति अधिक प्रिय लगने लगता है । चाहे ऐसे व्यक्ति में लाखो अवगुण हो लेकिन उसे वही अधिक सज्जन प्रतित होता है । अभिमानी व्यक्ति को अपनी प्रशंसा बहुत भाती है ।

एक शिल्पी का बहुत सुदंर मूर्तियाँ बनाता था । परंतु उसे अपनी कला का बहुत ही अभिमान था । उसने अपनी ही नो मूर्तियों बनायी । मूर्तियाँ जैसे उस शिल्पी की हुबहु नकल थी । मूर्तियो को देखकर उसके मन में हुआ कि यमदूत भी यदि उन्हें देखेंगे तो धोखा खा जायेंगे । एक दिन यमदूत शिल्पी को लेने आये । उन्होंने एक साथ दश शिल्पी देखे । यमदूत के मन में विचार आया कि वास्तविक शिल्पी कौन सा है । जिसे वह भाव में से जाये । वास्तव में यमदूत चिंतित हो गये । यमदूत वापस यमपुरी में लौट आये और यमराजा ने बात की । यमराज को भी आश्चर्य हुआ कि इस में से वास्तविक शिल्पी कौन सा है । मूर्तियो को देखकर यमराजा बोले अद्‌भूत

है शिल्पकार है। कौन होगा वह ? यदि वह मुझे मिल जाय तो मैं उसे इनाम दूंगा । प्रसंशा करने पर तुरंत ही शिल्पकारने उत्तर दिया इन मूर्तियो को मैने बनाया है। यमराजने यमदूत से तुरंत कहा पकड़ लो इसे। और ले जाओ यमपुरी में। देखा। यदि अपने अभिमान से कुछ बोला ना होता तो यमदूत से बच गया होता । परंतु अभिमानी व्यक्ति बिना बोले रही नहीं सकता । अभिमानी व्यक्ति को अपनी प्रसंशा मिशरी से भी अधिक मीठी लगती है। शिल्पकार को यमपुरी में ले जाने पर एक कहावत बनी है।

''अभिमान नरक का द्वार है।''

अभिमानी मनुष्य अपनी पद की गरिमा से भी गिर जाता है। पांच पांडव हिमालय में स्वर्गारोहण करने गये। रास्ते में सहदेव और नकुल गिरे हुए पडे थे। सहदेव और नकुल को रास्ते में गिरा हुआ देखकर युधिष्ठिर से पूछा कि ये क्यों गिरे हुए हैं ? तब युधिष्ठिर ने कहा कि सहदेव को अपने ज्ञान का अभिमान था और नकुल को अपने रुप का अभिमान था। इसीलिए वे घेर गये। अभिमानी मनुष्य का सदैव वत्ल होता है। अभिमानी सदैव मैं मैं का भावना रखता है । वह मैं को नही छोडपाता । हमने महाभारत तथा रामायण में देखा है कि रावण तथा दूर्योधन का निधन अभिमान के कारण हुआ था।

एकबार भीम को थोडा अभिमान हुआ। भीम जब भोजन करने बैठे तो उनकी माता परोस रही थी। भीमने माता से कहा ''माता मुझसे अधिक और कोई बलवान है क्या ?'' माताने कोई उतर नही दिया क्योंकि माता को ज्ञान था कि अहंकार अच्छी चीज नहीं है। वे कुछ बोली नहीं इस कारण भीमने भोजन नहीं किया । यह घटनाक्रम दो-तीन दिवस तक चला। भी अपनी माता के मुख से सुनना था कि वह बहुत ही बलवान है। परंतु उनकी माता कुछ बोलती नहीं थी। इसी लिए भीम घर से बाहर नीकल जाता था। और जंगल में चला जाता था।

चलते-जलते उसे रास्ते में एक भारी मनुष्य रास्ते के बीचो बीच सोया था। भीमने एक पहाड उठाकर उसके उपर फेंक दिया । उस भीमकाय मनुष्यने कहा कि, लडके मेरे उपर क्यों कंकर पत्थर मार रहे हो ? अब मैं तुम्हें मार डालूंगा परंतु साम को सुरज डुबने से पहले मुझे अपनी नींद पूरी करनी है। तब तक तुझसे जितना अंतर कट पाये काट कर भाग जा। लेकिन सूरज डूबने से पहले में तुझे खा जाऊँगा। भीम के मन में हुआ कि यह तो कोई मुझसे भी अधिक बलवान है। क्योंकि पहाड को भी फेंकने पर उसे लग रहा है कि मैं उस पर कंकर मार रहा हूँ। भीम वहाँ से भागे और भागते भागते मार्ग में उन्हें एक बिना हाथों वाला एक भयानक आदमी मिला। भीमने उसे मदद मांगी उस बिना हाथ वाले आदमीने भीम से कहा कि वह उनके पीछे छिप जाये। भीम उनके पीछे जाकर छिप गये। उसी समय वह दूसरा भायनक आदमी उन्हें खोजते हुए आ पहुँचा। सामने खड़े आदमी से पूछा कि यहाँ मार्ग से कोई मनुष्य अभी गुजरा है तो उसने तुरंत उत्तर दे दिया कि वह मेरे पीछे छिपा हुआ है। भीमने सोचा कि पहले तो इसने मुझे आश्रय दिया और बाद में फसा दिया। लेकिन जैसे ही उस आदमीने भीम को पकडने का प्रयत्न किया कि तुरंत ही उस बिना हाथवाले मनुष्यने उसे पकड लिया और भीम से कहा कि तुम भागो और जब तक तुम घर नहीं पहुंचोगे तब तक में उसे नही छोडूगा। रास्ते में भागते समय भीमके मन में विचार आया कि मैं अपने आपको बलवान मानता था। परंतु वो दोनो तो मुझसे भी अदिक बलवान है।

भीमने वापस जंगलमें आकर बिना हाथवाले मनुष्य से पूछा कि आप कितने शक्तिशाली है और वह जिस पर मैने पहडा फेंका और उसे वह कंकर जैसा लगा वह कितना बलशाली है, उससे भी अधिक जिसने आपके दोनो हाथों को काट दिया वह कितना शक्तिशाली है। मुझे यह जानना है कि आपके हाथो को किसने काटा।

उस बिना हाथवाले मनुष्यने कहा कि इस धरती पर पांच पांडव है जिसमें से एक अर्जुन महान धर्नुधर है। उसने शब्दभेदी बाणों को चलाकर मेरे दोनो हाथो को काट दिया। बाद में मैने सोचा कि मुझे तो मर जाना चाहिए। परंतु मैं सिर्फ और सिर्फ पांचो में से एक पांडव मेरे हाथ में आ जाये तो उन्हें कच्चा खा जाउंगा। इसी आशय से जीवित हूँ।

यह सुनकर भीम अपनी पहचान भी नही दे सके। उनका अभिमान खत्म हो गया। घर वापस आकर अपनी मां से मांफी मांगे और विचार किये कि कभी अभिमान नहीं करना चाहिए। जब हम दुनिया में आते हैं तब संसार में जगह हो जाती है, जब जाते है तो वह जगह भर ताजी है। ऐसा नहीं कि हमारे विना कोई काम अधुरा रहे।

महाराज को अभिमान अच्छा नहीं लगता। इस लिये जिन्हें भगवान को प्रसन्न करना हो वे अभिमान छोड़कर दास भाव रखकर निर्मानी भाव से संतो की सेवा करने से भगवान प्रसन्न होते हैं।

●

भगवान की पहचान हो जाय तो काम हो जाय

– लाभुबहन मनुबाई पटेल (कुंडाल – ता. कडी)

भाल प्रदेश में बगोदरा रोड से आठ कीमी भीतर बडोल गाँव है। वहाँ पर चारण ज्ञाति में देवीदान का जन्म हुआ था। देवीदान को बाल्यावस्था से ही मंदिर जाना भजन-भक्ति करना, बहुत अच्छा लगता था। उन्हें खेलना कूदना अच्छा नहीं लगता था। गाँव से दूर अंकलेश्वर महादेव का मंदिर था। वहाँ की सेवा पूजा देवीदानके पिता जीजीभाई करते थे। एकदिन पिता को बाहर जाना था अपने बेटे से कह के महादेवजी के मंदिर में पूजा करने जाना मैं एक महीना बाद आऊँगा। तुम भाव पूर्वक पूजा करना भगवान प्रसन्न हो जायेंगे।

देवीदान बिल्वपत्र चढाते – दूधचढाते अभिषेक करते और कीर्तन गाते। भगवान उनके ऊपर प्रसन्न हो गये और प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहे कि सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण तुम्हें प्रत्यक्ष दर्शन देंगे।

यह सुनकर देवीदान को प्रगट परमात्मा के दर्शन की चाहना बढ गई। प्रभु जेतलपुर में यज्ञ कर रहे थे। उस समय सारा सत्संग वही पर आया हुआ था। भगवान उस समय दूधपीने की लीला कर रहे थे। जो दूधपीते वह हाथ से नीचे उतर जाता और जीभ से उसे चाटने लगते यह देखकर देवीदान को हो गया कि यह भगवान हैं। यद्यपि गाँव के बहुत सारे लोगों को हुआ कि क्या ये भगवान हो सकते हैं ? इन्हें खाने भी नहीं आता। पागल की तरह वर्तन कर रहे हैं। देवीदान श्री स्वामिनारायण भगवान के पास आये। हे प्रभु ! मैं आपके साथ चलूंगा ? महाराजने कहा कि आप कौन हैं। मेरा नाम देवीदान गढवी है। प्रभु ने कहा कि हमारी तथा आपकी पहचान पुरानी है। समय वीतते देवीदान को भागवती दीक्षा देकर देवीदान स्वामी रख दिये। भगवान की पहचान हो जाय तो सभी काम हो जाय। यह बडोल गाँव राजपूतों का है अमदावाद श्री नरनारायणदेव, मुली श्री राधाकृष्णदेव तथा धर्मकुल का आश्रित निष्ठावाला है। यहाँ पर स.गु. देवानंद स्वामीका जन्म स्थान स्मारण भी बनाया गया है।

समस्त सत्संग की जानकारी के लिये

समस्त सत्संग को ज्ञापित करना है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - अमदावाद हवेली में सेवा-पूजा करती हुई सांरव्ययोगी सुंदरबा, सांरव्ययोगी भारतीबा, सांरव्ययोगी चंपाबा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में से स्वेच्छा प्रसन्नता के साथ अन्यत्र चली गई है। जिसकी समस्त सत्संग को जानकारी हो। **- आज्ञासे**

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में गुरुपूर्णीमा महोत्सव

सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान ने इस संप्रदाय की अलौकिक परंपरा बनाई है। जिस में देव-आचार्य-संत तथा हरिभक्त। अपने स्थान पर दो गादी की स्थापना किये। इस स्थान पर अपने पवित्र कुल के दो भाइयो के दो पुत्रों को दत्तक लेकर समस्त संप्रदाय के आचार्य गुरु के रुप में स्थापित किये तथा उन्हीं की आज्ञा में रहने के लिये समस्त सत्संग को आज्ञा किये। जिस परंपरा में आज श्री नरनारायणदेव गादी पीठस्थान पर श्रीहरिके ७ वें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री विराजमान है।

आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अमदावाद कालुपुर मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में अनेक धामों से पूज्यनीय संत, महंत तथा देश विदेश से हरिभक्त उपस्थित होकर प.पू. लालजी महाराजश्री अध्यक्षता में तथा प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था।

प्रात: ८ बजे से मंदिर के विशाल चौक में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री का संत-हरिभक्तों की विशाल उपस्थिति में गाजे बाजे के साथ दिव्य स्वागत किया गया था। इसके बाद श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों द्वारा परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती की गई थी। बाद में प्रसादी के अलौकिक सभा मंडप में प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री विराजमान हुये थे। मंदिर के विद्वान पंडितो द्वारा स्वस्तिवाचन विधिके बाद अनेक धामों से पधारे हुये संतो द्वारा तथा हरिभक्तों द्वारा समूह में आरती की गई थी। मंदिर में कोई ऐसी जगह बाकी नहीं थी जहाँ पर लोग एक पैर से भी खड़े हो सके, इतनी भीड थी। फिर भी श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के आश्रितों का उत्साह समा नही रहा था। आये हुये संतो द्वारा सर्व प्रथम पुष्पहार से महाराजश्री का पूजन किया गया था। बाद में आरती उतारे थे। इसके बाद गाँव-शहर से पधारे हुए हरिभक्त बडी शालीनता के साथ क्रम बद्ध लाईन में चरण स्पर्श दर्शन करके महा लाभ लिये थे। बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभा में श्री नरनारायणदेव के गाँवो में धर्मसम्बन्धी दान भेंट के लिये जो संत गये थे उनका स्वयं नाम लेकर एक एक करके सभी का पुष्पहार से संमान किया था। अन्य सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

जो इस अंक में प्रकाशित है। इस प्रसंग की सुंदर व्यवस्था महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वामी हरिचरणदासजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, शा. मुनि स्वामी, भक्ति स्वामी, हरि स्वामी इत्यादि संत पार्षद प्रेरणात्मक सेवा की थी। सभा संचालन स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(शा.नारायणमुनिदासजी)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू. लालजी महाराजश्री का २० वाँ प्रागट्योत्सव संपन्न

भरतखंड के अधिष्ठाता परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा श्रीहरिके छठ्ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में प.पू. लालजी महाराजश्री का २० वाँ प्रागट्योत्सव आषाढ कृष्ण-१० ता. १९-७-२०१७ को धूमधाम से मनाया गया था।

प्रात: ८-०० बजे मंदिर के बाहर से प.पू. लालजी महाराजश्री का संत हरिभक्तों द्वारा स्वागत किया गया था। बाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने उतारी थी। प्रसादी के सभा मंडप में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में प.पू. लालजी महाराजश्री पीठ स्थान पर विराजमान हुए थे। स्वस्ति वाचन विधिके बाद अनेक धामों से पधारे हुए संतोने आरती उतारी थी। इसके बाद ट्रस्टी मंडल - अग्रगण्य हरिभक्तों ने की थी। अनेक धामों मे कालुपुर, जेतलपुर, छपैया, नारणघाट, नारणपुरा, महेसाणा, एप्रोच, गांधीनगर, अंजली, वडनगर, हिंमतनगर, धोलका, इडर, सापावाडा, बावला, बोपल इत्यादि स्थानो से युवान संत प.पू. लालजी महाराजश्री का २० प्रागट्यत्सव को अपने हृदय के भाव को प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षतामें आज्ञा में श्री नरनारायणदेव देश में सत्संग में खूब वृद्धि हो ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना की थी। युवान संत-महंतो के साथ श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा का प्रकाशन का विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों कि या गया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने संतो

के लिये धर्मकुल परिवार का अनहद प्रेम तथा आत्मीयता कैसी होती है इस वात को अ.नि. प.पू. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी के अलौकिक प्रसंग का वर्णन किये थे। सभी हरिभक्तों का तथा संतो का प.पू. लालजी के प्रति जो आत्मीयभाव - प्रेम है उसकी प्रशंसा किये थे। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री सभी संत-हरिभ्कतों के प्रेम भाव की प्रशंसा किये थे। सभी से कहे कि सभी सत्संग समाज का कर्तव्य है कि देव में दृढ निष्ठा बनी रहे ऐसा सदैव विचार करते रहना चाहिए। इसी में सभी का श्रेय है और कल्याण है इस तरह का सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ओस्ट्रेलिया के प्रवास में थे, फिर भी उन्होंने समस्त संत-हरिभक्तों को प.पू. लालजी महाराजश्री के २० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग की भावना तथा शुभेच्छा की प्रशंसा किया था।

समग्र प्रसंग कालुपुर मंदिर के. पू. महंत स्वामी के मार्गद्रशन में ब्र. राजेश्वरानंदजी, को.जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी, योगी स्वामी, शा. मुनि स्वामी, भक्ति स्वामी, हरि स्वामी, गांधीगनर के पी.पी. स्वामी, इत्यादि संतो के सुंदर प्रयास से यह उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर गाँव-गांव से हरिभक्त तथा संत पधारकर लालजी महाराज का पूजन अर्चन-आरती किये थे। इस सभा का संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था। साथ में शा. नारायणमुनिदासजी भी संचालन का कार्य किये थे। सभी आगुन्तक भोजन का प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे। श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(शा. नारायणमुनिदासजी - कालुपुर)

अमदावाद मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का हिंडोला दर्शन

सर्वावतारी श्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्तित हिंडोला (झूला) का आज भी उसी रुप में परंपरानुसार दर्शन का लाभ सभी को मिलता है। कभी पंचमेवा से तो कभी चोकलेट से कभी फूलो से झूले को सजाया जाता है। आषाढ कृष्म-२ से श्रावण कृष्ण-२ द्वितीया तक इष्टदेव श्री बालस्वरुप हरिकृष्ण महाराज को झूले पर रखकर झुलाया जाता है। पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में तथा को. जे.के. स्वामी, ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा संत मंडल की प्रेरणा से हरिभक्तगण झूले का यजमान बनकर लाभ लेते हैं। अक्षर भुवन में विराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज को भी विविधप्रकार के झूले पर झुलाकर हरिभक्तों को दर्शन का लाभ दिया गया था। (योगी स्वामी - कोठारी)

श्री नरनारायणदेव देश के मंदिरो द्वारा बनासकांठा के जलप्लावन से पीडितो को सहयोग

गुजरात के बनासकांठा के धानेरा, धरा, रुई, खारीया, इत्यादि गाँवो मे अतिवृष्टि होने से जलप्लावन की स्थिति हो गई थी। जिस में हजारो लोग निराधार हो गये थे तथा कितने तो जल के प्रवाह में प्रवाहित हो गये थे। हजारो पशु मृत्यु को प्राप्त किये थे।

सर्वोपरि श्रीहरिने शिक्षापत्री में भी दीन दुःखियों की सेवा सहयोग करने की आज्ञा की है। अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ओस्ट्रेलिया तथा इग्लेन्ड के धर्मप्रवास में थे फिर भी वहाँ से उन्होंने दुःखद समाचार जानकर सहयोग करने की बात की। प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी मंदिरो के महंत स्वामीयों से कहा कि वे लोग स्वयं स्थल पर जाकर यथासहयोग करें। पीडितो को जो भी वस्तु चाहिये उन्हें दिया जाय। तभी उनके दुःख में सहभागिता होगी।

इस कार्य में - अपने कालुपुर, जेतलपुर, धोलका, श्री स्वामिनारायण म्युजियम, कांकरिया, नारणघाट, नारणपुरा, बोपल, जीवराजपार्क इत्यादि सभी छोटे बड़े मंदिरो से एक लाख से भी अधिक फूट पेकेट तथा अन्य आवश्यक सामग्री गाँवो में पहुंचाई गई थी।

स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में को. जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी इत्यादि संत मंडलने फूड़ पेकेट बनवाया था। इसके अलांवा अन्य सभी मंदिरो से फूड़ पेकेट बनाकर वहाँ ले जाया गया था। इसके अलावा आवश्यक सामग्री भी ले जाई गई थी। इसमें को. जे.के. स्वामी, वासुदेव स्वामी, एस.एस. स्वामी, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बनासकांठा तथा अमदावाद श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने खूब श्रद्धापूर्वक फूड़ पेकेट तथा जीवन जरुरी वस्तुओं को स्वयं उस स्थल पर जाकर असर ग्रस्तो को दी थी। (अतुल पटेल - नरनारायणदेव युवक मंडल)

पवित्र चातुर्मास में थरा गाँव में (बनासकांठा) कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से बनासकांठा में ता. २१-७-१७ से ता. २३-७-१७ तक श्रीमद् भागवत दशमस्कन्धकी त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। बनासकांठा के थरा, डीसा, दियोदर, भाभर इत्यादि गाँवो से हरिभक्त पधारकर कथामृत का पान किये थे। पूर्णाहुति प्रसंग पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी, शा. हरि

स्वामी, स्वा. जयवल्लभदासजी पधारकर कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सर्वोपरि भगवान की तथा धर्मकुल की महिमा समझाये थे। समग्र प्रसंग दियोदर गाँव के सहयोग से यह प्रसंग अच्छी तरह सम्पन्न हुआ था। सभा संचालन को. स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया था। बनासकांठा में ऐसा सुंदर कार्यक्रम सभी के लिये उदाहरण रुप था।

(दिलीपभाई ठक्कर - दियोदर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल द्वारा आयोजित वनविचरण पंचान्ह कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माडंल के चातुर्मास में ता. १७-७-१७ से २१-७-१७ तक श्री नीलकंठ वन विचरण पंचान्ह कथा स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। भक्तजन कथा श्रवण का लाभ लिये थे। कथा के प्रारंभ में स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि की गई थी। बाद में समूह में आरती हुई थी। ११०० सौ जितने भक्त साथ मिलकर महामंत्र की धुनि किये थे। कथा के समय रात्रि में भोजन की भी व्यवस्था की गई थी। बहुत सारे यजमान इसका लाभ लिये थे। (कोठारीश्री - मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर १७१ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर में बिराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के १७१ वें पाटोत्सव की विधिसम्पन्न हुई। ता. ३-६-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। प्रथम मंदिर में बिरामजान ठाकुरजी की आरती उतारे थे, बाद में प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। प्रथम मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी की आरती उतारे थे, बाद में प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती की गई थी। अनेक धामों से संत पधारे थे। जिस में कालुपुर से पू. महंत स्वामी, को. जे.के. स्वामी, नारायणघाट, जेतलपुर, गांधीनगर, वडनगर इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे। सभी संतो ने सर्वोपरि श्रीहरि का तथा धर्मकुल का महत्वि समझाया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

(को. जयवल्लभ स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा सत्संग प्रवृत्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण कालियाणा में प.पू. लालजी महाराजश्री के २० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग को ४ घन्टे तक महामंत्र की धून रखकर बहनोंने संपन्न किया था।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से यहाँ चातुर्मास में सांख्ययोगी बबुबाने कथा का बहनों को लाभ दिया था। इसके अलावा ठाकुरजी को झूले पर झुलाया गया था। बड़ी संख्या में बहने उपस्थित होकर कथा-भजन कीर्तन का लाभ ली थी। (गाँव समस्त हरिभक्त - कालीयाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर असलाली में महिला मंडल द्वारा पंचान्ह पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से तथा सां.यो. बचीबा की प्रेरणा से असलाली गाँव में श्री स्वामिनारायणमंदिर में ता. २७-६२०१७ से १-७-२०१७ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण अ.सौ. आरतीबहन कौशिकभाई पटेल के यजमान पद पर तथा सां.यो. नर्मदाबा (जेतलपुरवाली) के वक्ता पद पर यह कथा संपन्न हुई थी।

इस कथा का श्रवण सभी गाँव के भक्त तथा बहनोने किया। कथा के अवसर पर अमदावाद से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी पधारकर कथा श्रवण करके सभी बहनों को आशीर्वाद दी थी . कथा में आनेवाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे। इस प्रसंग पर महिलाओं की सेवा प्रेरणारुप थी। (महिला मंडल - असलाली)

गढा (हिंमतनगर) गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजचश्री की आज्ञा से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से गढा गाँव में सर्व प्रथम दरबारगढ में ता. ९-७-१७ को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीने मूल संप्रदाय की परंपरा तथा श्री नरनारायणदेव गादी तथा देव के प्रति निष्ठा को समझाकर सभी प्रसन्न किया गया था।

(जय एम. पटेल - हिंमतनगर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम गुरु पूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से यहाँ के मंदिर में आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन स.गु. ब्रह्मानदं स्वामी सभा मंडप में श्री घनश्याम

महाराज के सानिध्य में गुरु पूजन का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। महंत स्वामी की प्रेरणा से मूलीधाम के सभी संत तथा हरिभक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के तस्वीर का पूजन-अर्चन करके धर्मकुल का महत्व समझाये थे। इस प्रसंग पर हजारो हरिभक्त गुरु पूजन का तथा ठाकुरजी के दर्शन का लाभ लिये थे। सभी धन्यता का अनुभव कर रहे थे। मंदिर के कोठारी स्वामी तथा संत मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी। (पार्षद भरत भगत)

धांगध्रा से मूलीधाम यात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से धांगध्रा से मूलीधाम तक लकझरी बस द्वारा मंदिर में सेवा पूजा करने वाले स्वामी सर्वजीव हितावरदासजी के साथ हरिभक्तों ने मूलीधाम ठाकुरजी का दर्शन करके गुरु पूर्णिमा को गुरुपूजन करके अपने जीवन को धन्य बनाया था।

(प्रति. अनिल दुधरेजिया)

धांगध्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर १५३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा का १५३ वाँ पाटोत्सव ता. १-७-२०१७ को धूमधाम से मनाया गया था । यहाँ पर श्रीहरिकृष्ण महाराजकी प्राण प्रतिष्ठा आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने की थी । समग्र आयोजन धांगध्रा मंदिर में सेवा-पूजा करने वाले संत सर्वजीवहितावहदासजी ने किया था। ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा अन्नकूट की आरती संतोने उतारी थी । स्वामी भक्तिहरिदासजी तथा संत मंडलने भगवान का तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था।

(प्रति अनिल दूधरेजिया - धांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ गुरु पूर्णिमा उत्सव

परमकृपालु परमात्मा की की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से रणजीत हरिकृष्णधाम में आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के तस्वीर का पूजन-अर्जन किया गया था। जिस में संत-हरिभक्त बहने, सां.यो. बहने भी उपस्थित होकर पूजन का लाभ ली थी।

प्रासंगिक सभा में स्वामी भक्तिहरिदासजी, धांगध्रा मंदिर के सर्वजीवहितावह स्वामी, मोरबी के धर्मजीवन स्वामी इत्यादि संतोने धर्मकुल की परंपरा तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। अन्त में सभी प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे। (प्रति - अनिलभाई - धांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन
(आई.एस.एस.ओ. अमेरिका)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ती कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मदिर के महंत स्वामी नरनारायणदासजी की प्ररणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन के ३० वें पाटोत्सव अंतर्गत घनश्याम बाल चरित्र की त्रिदिनात्मक कथा ब्र.स्वा. पवित्रानंदजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। इस प्रसंग के यजमा प.भ. अंबालाल नानदास पटेल परिवार (वडु) ह. गोविंदभाई, सहयजमान पटेल नारणदास माधवदास परिवार तथा अ.सौ. नीताबहन जयेन्द्रभाई पटेल तथा कथा के मुख्य यजमान पटेल शारदाबहन अमृतलाल, सहयजमान पटेल रेखाबहन अंबालाल तथा पटेल कलावतीबहन विठ्ठलदास आदि थे। श्रीहरिकृष्ण महाराज का संतो द्वारा षोडशोपचार अभिषेक विधिपूर्वक किया गया। इस प्रसंग पर मेडीकल केम्प का भी आयोजन किया गया । जिस में ८० जितने हरिभक्तोंने प्रतिभाग लिया । कौशिकभाई - दिपीकाबहन मजुमदारने ठाकुरजी को सुंदर हार भेट स्वरुप प्रदान किया। सर्वोपरि श्री स्वामिनरायण भगवान की तथा धर्मकुल की महिमा संतो ने कही। ठाकरुजी के भव्य अन्नकूट दर्शन करके हरिभक्तोंने सुखद अनुभव किया। (पटेल बलदेवभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया
(आई.एस.एस.ओ. अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में जून महीने के अंतिम शनिवार को सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक ठाकुरजी के समक्ष संत हरिभक्तो द्वारा भव्य उत्सव मनाया गया था। सभा में सर्व प्रथम महामंत्र की धूनि की गई थी। ठाकुरजी को सिंहासन पर रखकर अनेक प्रकार के व्यञ्जन से भोग लगाया गया था। जिसका प्रसाद सभी को दिया गया था । इस प्रसंग के यजमान, सहयजमान तथा छोटी-बड़ी सेवा करने वाले अन्य भक्तों को महंत स्वामीने पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया था। अंत में जन मंगल पाठ, हनुमान चालीसा संध्या आरती, नित्य-नियम के बाद सभी प्रसाद लेकर विदा हुए थे।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नेसवील टेनेसी का भूमिपूजन (आई.एस.एस.ओ.)

भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान ती कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के निष्ठावान हरिभक्तो के सहयोग से अमेरिका के नेसवील टेनेसी में नूतन भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर (हिन्दु मंदिर) का भूमि पूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न किया गया था। जिस में ७०० जितने हरिभक्त उपस्थित थे।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. १९-५-२०१७ से ता. २१-५-१७ तक शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर कथा का आयोजन किया गया था । भूमिपूजन के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने प्रसन्न होकर सभी को आशीर्वाद दिया था।

इसके साथ ही दादाश्री तथा अन्य हरिभक्तों की सेवा की प्रसंशा किये थे । जल्दी मंदिर का कार्य पूर्ण हो इसके लिये श्री नरनारायणदेव की प्रार्थना किये थे । नेसविल में नियमित सभा होती है। इसो के नये चेप्टर बोलीनग्रीन में भी नियमित सभा होती है।(प्रेसि. मनहरभाई पटेल - नेसविल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) छठ्ठा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर के छठ्ठे पाटोत्सव के अन्तरगत ता. १५-६-१७ से १७-६-१७ तक त्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर तथा प.भ. राकेशभाई अमरतबाई पटेल के मुख्य यजमान पद पर हुई थी । इस प्रसंग पर संत-हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित थे। रास-गर्बा का भी आयोजन किया गया था। दीप प्रागट्य का कार्य बड़े हरिभक्तो द्वारा किया गया था । इस प्रसंग पर वर्जीनीया में ५०० एकड़ जमीन पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ संकल्प द्वारा आयोजित ''देवस्य'' प्रोजेक्ट के निर्माण में अनेक हरिभक्तों ने सेवा करने के लिये अपना नाम लिखवाया था।

सभा संचालन के.पी. स्वामी ने किया था। समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था । ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट समूह आरती का लाभ सभी भक्तों ने लिया था। बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था। पूर्णाहुति के प्रसंग पर यजमान को भगवान की मूर्ति भेट के रुप में दी गई थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रसंग पर पधारे थे। वे प्रसन्न होकर हरिभक्तों को माला कंठी से सन्मान करके आशीर्वाद दिया था।

प्रेसि. श्री दक्षेश पटेलने आभार विधिकी थी। सभी के सेवा की प्रशंसा किये थे । अन्त में सभी हरिभक्त अन्नकूट दर्शन करके प्रसाद लेकर कृतार्थ हुए थे। (रजनी पटेल)

एलटन टाउन वडताल धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) द्वितीय पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर द्वितीय पाटोत्सव यहाँ के संत तथा भारत से पधारे हुए संतो की विशाल उपस्थित में धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर महंत शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी के वक्तापद पर निष्कुलानंद स्वामी कृत परचा प्रकरण की त्रिदिनात्कम कथा हई थी । रविवार को ठाकुरजी का षोडशोपचार से अभिषेक किया गया था । प्रेसि. श्री भीखाभाई पटेल यजमान पद का लाभ लिये थे।

प्रासंगिक सभा में जेतलपुर मंदिर के महंत स्वा.शा. आत्मप्रकाशदासजी, पूर्णानन्द स्वामी, विवेक स्वामी, डी.वी. स्वामी, सत्संगिभूषण स्वामी, पवित्रानंदजी, डी.के. स्वामी इत्यादि संत-मंडलने सर्वोपरी श्रीहरि का तथा धरर्मकुल का माहात्मय समझाया था । सेवा करने वाले हरिभक्तों का पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया गया था। प्रेसि. श्री भीखाभाईने आभार विधिकी थी।(प्रविणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) रथयात्रा तथा हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी नीलकंठदासजी की प्रेरणा से ह्युस्टन के श्री स्वामिनारायण मंदिर में २४ जून शनिवार को संत-हरिभक्तों द्वारा ठाकुरजी की भव्य रथयात्रा निकली गई थी। जिस में यजमान प.भ. मुकेश पटेल, महेन्द्रभाई पटेल ने पूजन का लाभ लिया था।

सभी भक्तों को अलौकिक प्रसाद दिया गया था। अन्त में मंदिर में रथ पधारते समय ब्राह्मण देवता तथा यजमान परिवार, सेवा करने वाले हरिभक्तोंने ठाकुरजी की आरती उतारी थी । श्रावण मास में ठाकुरजी को झूले में रखकर विविधप्रकार से सजाकर झुलाया गया था । सभी दर्शन करके धन्य हो गये थे। सायंकाल की आरती नित्य-नियम करके प्रसाद लेकर सभी अपने स्थान के लिये प्रस्थान किये थे। (प्रवीणभाई शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

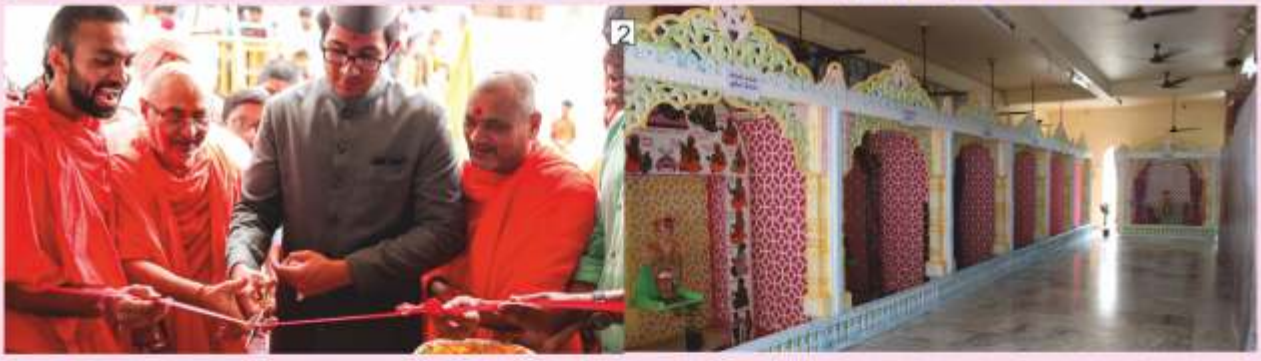

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, वडनगर तथा महेसाणा में ठाकुरजी का हिंडोला दर्शन ।(२) गांधीनगर सेक्टर-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर में विविध प्रकार के हिंडोला महोत्सव का उद्घाटन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(३) बनासकांठा विस्तार में आई हुइ जलप्लावन की आपत्ति में सहायता करने के लिये जेतलपुर मंदिर से फूट पैकेट तथा जीवन की आवश्यक वस्तुओं का वितरण करते हुए महंत स्वामी तथा हरिभक्त ।